2 मार्च 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर
दोपहर 3 से 4 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 43, अंक : 23
मार्च (प्रथम), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दक्षिण भारत शास्त्री सम्मेलन संपन्न

हेरले-कोल्हापुर (महा.) : यहाँ तीन चौबीसी दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 20 फरवरी को दक्षिण भारत शास्त्री सम्मेलन चौबीस तीर्थंकर मण्डल विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रथम सत्र के अध्यक्ष ब्र. यशपालजी जैन थे। प्रथम सत्र परिचय सत्र रहा, जिसमें दक्षिण भारत के अनेक शास्त्री विद्वानों ने अपने परिचय के साथ-साथ अपनी समस्याएं भी बताई।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट ने ऑनलाइन सम्बोधन दिया। इस सत्र का संचालन प्रसन्नजी शेटे एवं आभार प्रदर्शन जितेन्द्रजी राठी पुणे ने किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई थे। इस सत्र में पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित हेमन्तजी बेलोकर, पण्डित शांतिनाथजी पाटील, पण्डित प्रसन्नजी शेटे, पण्डित रवीन्द्रजी महाजन, पण्डित रवीन्द्रजी मसलकर, पण्डित देवांगजी गाला, पण्डित संयमजी शेटे, पण्डित कीर्तिजयजी गोरे परभणी आदि विद्वानों ने समस्याओं के समाधान प्रस्तुत किये। सम्मेलन के आयोजक पण्डित महावीरजी पाटील सांगली ने कार्यक्रम का परिचय दिया तथा इस सत्र का संचालन पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर एलोरा ने किया।

इस अवसर पर महाराष्ट्र प्रांतीय शास्त्री परिषद् की घोषणा, सभा अध्यक्ष बिपिनजी शास्त्री ने की, जिसमें डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, कीर्तिजयजी गोरे, गुलाबचंदजी बोरालकर, विक्रांतजी शहा, शांतिनाथजी पाटील, हेमन्तजी बेलोकर, श्रुतेशजी सातपुते आदि सम्मिलित हैं। सम्मेलन में महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के लगभग 125 शास्त्री विद्वान सम्मिलित हुये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

भक्तामर विधान एवं सत्पथ सत्संग संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ एम्प्रेस सिटी स्थित नक्षत्र बैंक्वेट हॉल में सत्पथ फाउण्डेशन द्वारा संचालित सत्पथ पाठशाला के वार्षिक महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 7 फरवरी को श्री भक्तामर मंडल विधान एवं सत्पथ सत्संग का आयोजन हुआ। 48 इंद्र-इंद्राणियों सहित हुए इस विधान के आमंत्रणकर्ता डॉ. सुरेशजी, श्री नरेशजी, श्री रमेशजी सिंघई परिवार नागपुर थे।

इस प्रसंग पर पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री, पण्डित रवींद्रजी महाजन शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी महाजन शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री झालरापाटन, पण्डित चैतन्यजी मांगुलकर शास्त्री काटोल आदि विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सत्पथ पाठशाला के लगभग 35 बालक-बालिकाओं ने टैलेंट शो का प्रदर्शन भी किया, जिन्हें पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्रुतेशजी सातपुते ने किया।

कार्यक्रम में श्री कुंदकुंद दिगंबर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट इतवारी, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा नागपुर के अतिरिक्त श्री सतीशजी मोदी, श्री सुरेशजी डायमंड, श्री प्रियदर्शनजी गहाणकरी, श्री विवेकजी टक्कामोरे, श्री प्रदीपजी जैन, श्री संदीपजी जैनी, श्रीमती सुनीताजी जैन, श्रीमती लक्ष्मीजी टक्कामोरे, डॉ. विमलाजी जैन, डॉ. शकुनजी जैन, श्रीमती मनीषाजी जैन, श्रीमती रुचि जैन, श्रीमती अणिमाजी जैन, श्रीमती प्राचीजी जैन, श्रीमती रेशमाजी जैन आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम में पाठशाला के बालक-बालिकाओं सहित सैंकड़ों साधर्मियों ने महोत्सव में प्रत्यक्ष परोक्ष उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. विवेकजी शास्त्री इंदौर ने सम्पन्न करवाए तथा डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल ने विधान एवं भक्तामर स्तोत्र के छंदों की व्याख्या की।

सम्पूर्ण कार्यक्रम सत्पथ फाउण्डेशन नागपुर के संस्थापक पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के संयोजन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के परोक्ष निर्देशन में सम्पन्न हुए।**- नरेश सिंघई, सत्पथ फाउंडेशन, नागपुर**

(14) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

तृतीय अध्याय का सार (संसार दु:ख तथा मोक्षसुख का निरूपण)

यह मोक्षमार्गप्रकाशक नामक ग्रन्थ आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी साहब की अनुपम रचना है। अब तक दो अध्यायों के सार की चर्चा आपके बीच हो चुकी है और अब तीसरे अध्याय की चर्चा प्रसंग प्राप्त है।

पहले अधिकार में भूमिका बनायी और दूसरे अधिकार में रोग के निदान की चर्चा की और यह सिद्ध किया कि हे जीव! तुझे बीमारी है और बिमारियों की बहुत बातें हुईं। बिमारियों की बातें अपेक्षित विस्तार से हो गई, तो भी यह जीव कहता है कि कोई बात नहीं, बीमारी ही है ना, तकलीफ क्या है? बीमारी और तकलीफ दोनों अलग-अलग चीज हैं, रोग हो पर कोई तकलीफ नहीं हो तो कोई भी ऑपरेशन नहीं करवाता। फिर जब डॉक्टर रोग की गंभीरता और उससे होने वाली परेशानियों से हमें अवगत कराता है तब हम ऑपरेशन के लिये तैयार होते हैं। उसीप्रकार यहाँ टोडरमलजी कह रहे हैं कि भाई संसार अवस्था में रहते हुए तेरे अनादिकाल से रोग पाया जाता है और उस रोग के कारण दु:ख भी पाया जाता है, उसकी सिद्धि यहाँ इस तीसरे अधिकार में कर रहे हैं।

यहाँ संसार के दु:खों का वर्णन करेंगे, हमारी अवस्थाओं का वर्णन करेंगे, चतुर्गति में हमने क्या-क्या दु:ख और क्या-क्या कष्ट भोगे हैं, यहाँ उन कष्टों की दास्तां सुनाने वाले हैं।

यहाँ इस तीसरे अधिकार में भी उसी तरह से चर्चा करते हैं, जिस तरह दूसरे अधिकार में चर्चा प्रारम्भ की थी। जिस तरह से कोई वैद्य रोग का निश्चय कराता है, फिर रोग से होने वाली तकलीफ को बताता है, फिर इस तकलीफ के मिटने का उपाय बतलाता है, यदि यह जीव उस उपाय को नहीं करे तो दु:खी ही रहेगा। इस दु:ख से कैसे छुटकारा मिल सकता है, यह वैद्यजी बतलाते हैं। यदि कोई समझदार व्यक्ति उनके अनुसार कार्य करे तो वह रोग के दु:ख से भी मुक्त हो सकता है। इसी उदाहरण को सिद्धान्त पर घटित कर दिया और कहा कि इस जीव के संसाररूपी रोग पाया जाता है, हमने रोग के कारण बतलाये, दु:ख के कारण बतलाये, फिर दु:ख का स्वरूप बतलाया और आज तक इसने दु:ख दूर करने के जो उपाय किये, उनको झूठा बताया तथा सच्चा उपाय भी बताएंगे। जब यह जीव उसे स्वीकार करेगा, तब कहीं जाकर अपने दु:खों से मुक्त हो पायेगा, यही विधि है।

इस अध्याय को दो भागों में बांटा जा सकता है, एक संसार दु:ख की चर्चा और दूसरा मोक्षसुख की चर्चा। सुख की चर्चा तो अन्त में संक्षेप में की है और संसार दु:खों की चर्चा को तीन भागों में बांटा है – पहला कर्मों की अपेक्षा से दु:ख, दूसरा पर्याय की अपेक्षा से दु:ख और तीसरा चार प्रकार की इच्छाओं की अपेक्षा से दु:ख।

यहाँ सबसे पहले कर्मों की अपेक्षा से दु:ख बताना प्रारम्भ करते हैं – भैया, संसार अवस्था में यह जीव मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के कारण दु:खी है; ये ही वास्तव में इसके दु:खों के मूल कारण हैं। मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की चर्चा मोक्षमार्गप्रकाशक के चौथे अधिकार में करेंगे।

कर्मों की अपेक्षा होने वाले दु:खों में सबसे पहले ज्ञानावरण दर्शनावरण की चर्चा करते हैं। क्या हमें महसूस होता है कि ज्ञानावरण और दर्शनावरण मेरे दु:ख का कारण बन रहे हैं? क्या मैं दु:खी हूँ ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म के उदय/क्षयोपशम से? ज्ञानावरण कर्म के उदय से ज्ञान का अभाव होता है, वह तो दु:ख का कारण हो सकता है, पर ज्ञानावरण का क्षयोपशम तो ज्ञान की प्रकटतारूप है, वह दु:ख का कारण कैसे हो सकता है?

जवाब देते हुए पण्डितजी लिखते हैं कि ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्म का जब क्षयोपशम होता है तो संपूर्ण जानना नहीं हो पाता, थोड़ा जानना होता है। इच्छा तो होती है बहुत को जानूँ, सबको जान लूँ, सबको देख लूँ, सबको सूंघ लूँ, सारी बातें सुन लूँ, पूरी दुनिया में कहाँ-कहाँ, क्या-क्या हो रहा है, सब पता कर लूँ, इच्छा तो ऐसी है; लेकिन शक्ति नहीं है, इसलिये जान नहीं पाता है और दु:खी होता है। इसप्रकार यह ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म का क्षयोपशम इस जीव के दु:ख में निमित्त बन जाता है।

यहाँ पण्डितजी साहब ने एक महत्वपूर्ण चर्चा उठायी है, अपनी बात को समझाते हुए पण्डित टोडरमलजी ने पेज नं.

46 पर उदाहरण दिया है कि जैसे कुत्ता हड्डी चबाता है, तो उसकी दाढ में से खून आता है, उसे लगता है कि हड्डी में से स्वाद आ रहा है, ठीक उसीप्रकार जब हम पाँचों इन्द्रियों के माध्यम से जगत के विषयों को ग्रहण करके आनन्द मानते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि विषयों में से आनन्द आ रहा है, लेकिन सच्चाई यह है कि विषयों में तो आनन्द है नहीं, आनन्द तो ज्ञान का आता है, स्वाद तो ज्ञान का आता है, लेकिन यह अज्ञानी जीव ज्ञान को तो पहचानता नहीं है। शुद्ध केवल ज्ञान मात्र का तो अनुभव करता नहीं है, ज्ञेय मिश्रित ज्ञान का अनुभव करता रहता है। ज्ञान और ज्ञेय मिले हुए दिखते हैं, उनका अनुभव करता रहता है, क्षयोपशम के कारण सर्व इच्छाएं पूरी नहीं होती इसलिये महादु:खी रहता है।

जगत के जीवों के दु:खों का चित्रण करते हुए पण्डितजी ने इन्द्रिय विषयों में प्राण गंवाने वाले जीवों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय आदि सभी जीव इच्छाओं से दु:खी हैं। देखो, स्पर्शन इन्द्रिय के कारण हाथी अपने प्राण गंवा देता है, रसना इन्द्रिय के कारण मछली जाल में फंस जाती है, घ्राण इन्द्रिय के वशीभूत होकर भंवरा अपने प्राण गंवा देता है, चक्षु इन्द्रिय के कारण कीट-पतंगे दीपक में जलकर मर जाते हैं, कर्ण इन्द्रिय के कारण हिरण और सर्प अपने प्राण गंवा देते हैं।

इन विषयों की हालत तो देखो, एक-एक इन्द्रिय के विषय में जगत के जीव अपने प्राण गंवाते हुए देखे जाते हैं। ये मनुष्य गति का जीव पांचों इन्द्रियों को भोगने की लालसा में प्राण गंवाएगा, तड़प-तड़पकर मरणपर्यंत दु:खी होगा, उसे भी नहीं गिनता और आत्महत्या करने के लिये भी तैयार हो जाता है। इन्द्रियों की पीड़ा सही नहीं जाती, कुछ विचार करता नहीं है, महादु:खी होकर पांचों इन्द्रियों के विषयों में मानो छलांग लगाता है। ये सब चर्चाएं पण्डितजी साहब ने यहाँ उठायी और इन सबका वर्णन करते रहे।

ज्ञानावरण और दर्शनावरण कर्म के उदय से होने वाले दु:ख से बचने के लिये इन्द्रियों को प्रबल करना चाहता है। विषय ग्रहण करने की शक्ति विशेष हो जाए इसलिये अनेक प्रकार के उपाय करना चाहता है, पर वे सारे उपाय तो होते नहीं हैं। हालत ऐसी है कि मण की भूख वाले को कण मिले तो बेचारे को क्या तृप्ति होगी? भूख तो बहुत अधिक है, मिलता थोड़ा सा है, इसीप्रकार इच्छा तो इतनी है कि सर्व जगत को देखूं, जानूं; लेकिन शक्ति कितनी सी है, कितना-सा देख-जान पायेगा।

शिष्य तर्क देता है कि जितना मिल जायेगा, उतने ही सुखी हो जाएंगे। यदि भूख 40 किलो की हो और एक कण मिले तब भूख तो नहीं मिटेगी, लेकिन एक-एक कण खाने पर भूख थोड़ी तो कम हो जाएगी? उसे पण्डित टोडरमलजी कहते हैं कि भैया, यदि वो कण इकट्ठे हो जाएं तब तो सुख माना जाए, पर वे कण इकट्ठे होते नहीं हैं, तू भ्रम से ही सुख मानता है। ये कहता है कि कभी लन्दन, कभी पैरिस, कभी अमेरिका, कभी स्विट्जरलैण्ड, कभी ऑस्ट्रेलिया इसप्रकार धीरे-धीरे करके सबको जान-देख लूंगा, तो टोडरमलजी कह रहे हैं कि यह असंभव है। धीरे-धीरे करके सभी विषयों को ग्रहण करना संभव ही नहीं है। कण-कण को जोड़कर इच्छाओं को पूरा करना असंभव है, इस संबंध में प्रवचनसार की 76 नं. की गाथा प्रस्तुत की -

सपरं बाधा सहिदं विच्छिण्णं बंधकारणं विसमं।
तं इंदिएहिं लद्धं तं सोक्खं दुक्खमेव तहा।।

ये इन्द्रियों के सुख बाधासहित हैं, विषम हैं, पराधीन हैं, परतंत्र हैं, बंध के कारण हैं, दु:खरूप हैं, इसलिये इनकी पूर्ति में रंचमात्र भी आनन्द नहीं है। ये जितने उपाय करता है सारे उपाय झूठे हैं। सच्चा उपाय तो यह है कि इसकी इच्छाएं दूर हों, और इच्छाएं कब दूर होंगी, जब क्षयोपशम मिटे और केवलज्ञान की प्राप्ति हो, चूंकि केवलज्ञान का उपाय सम्यग्दर्शन है, इसलिये यह जीव सम्यग्दर्शन के बिना सुखी नहीं हो सकता।

फिर पण्डितजी ने गजब का प्रश्न उठाया कि ज्ञानावरण व दर्शनावरण से जितना नहीं जानना हुआ वो दु:ख का कारण कहो, दु:ख का कारण क्षयोपशम को क्यों कहते हो? क्षयोपशम से तो जानना होता है, क्षयोपशम दु:ख का कारण नहीं है। तो पण्डितजी ने कहा - बात तो सच्ची है, लेकिन दु:ख का मूल कारण तो इच्छा है ना, क्षयोपशम से पूरा जानना नहीं हुआ, तो इच्छा बनी रही अत: दु:ख होता है, इसलिये क्षयोपशम को उपचार से दु:ख का कारण कहा है, परमार्थ से क्षयोपशम दु:ख का कारण नहीं है। इसका मोह और इच्छा ही दु:ख का कारण है। इसतरह ज्ञानावरण दर्शनावरण की बात कही। **(क्रमश:)**

रजि.नं. A803(N)

तीर्थधाम ज्ञानायतन के तत्त्वावधान में

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर, (महा) 440002

भारत देश की हृदयस्थली नागपुर में 13 वर्षों से शुद्ध तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अग्रणी संस्थान

साक्षात्कार शिविर :- शुक्रवार, 16 अप्रैल से रविवार, 18 अप्रैल 2021

महावीर विद्या निकेतन सिंहावलोकन

- सातवी से दसवी तक की सर्वोत्तम अध्यापन व्यवस्था
- लौकिक अध्ययन के साथ धार्मिक एवं नैतिक संस्कार
- अंग्रेज़ी तथा सेमि अंग्रेज़ी के माध्यम से लौकिक शिक्षा
- अंग्रेज़ी, गणित, विज्ञान आदि विषयों की अनुभवी शिक्षकों द्वारा कोचिंग
- व्यक्तित्व विकास के साथ शारीरिक विकास हेतु विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताऐं
- शैक्षणिक एवं धार्मिक यात्रा
- उत्तम सुविधाओं से युक्त संकुल
- विशिष्ट विद्वानों का समागम

*** प्रवेश-प्रक्रिया ***

सातवी कक्षा में प्रवेश इच्छुक छात्र 31 मार्च 2021 तक अपने प्रवेश फॉर्म कार्यालय में जमा करा देवें।

*** साक्षात्कार शिविर ***

16 अप्रैल से 18 अप्रैल तक

(छात्र को अभिभावक के साथ शिविर में उपस्थित रहना अनिवार्य है।)

संपर्क सुत्र

मंत्री	निर्देशक	संयोजक	उपसंयोजक	समिती सदस्य	प्रबंधक
अशोक कुमार जैन	डॉ. राकेश शास्त्री	नरेश जैन	विशाल मोदी	पं. विनित शास्त्री	पं. सुदर्शन शास्त्री
8788663913	9373005801	9373100022	9822700944	8439222105	9403646327

अधीक्षक : पं. भूषण शास्त्री 8857868455 | पं. मोहित शास्त्री 8239450359

Online फॉर्म भरने के लिए इन नंबरों पर संपर्क करे।

ज्ञानपहेली – मोक्षमार्गप्रकाशक, अध्याय–7 (उभयाभासी एवं सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि) के उत्तर

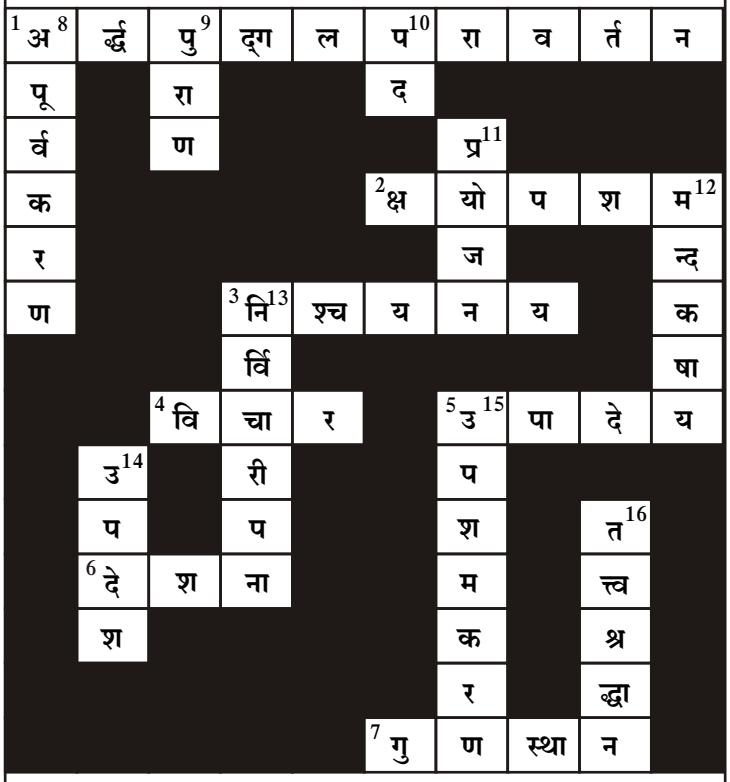

ज्ञानपहेली अध्याय–7 (उभयाभासी एवं सम्यक्त्वसन्मुख) के अन्तर्गत 39 उत्तर प्राप्त हुए हैं, जिनमें से 13 उत्तर सही हैं, उनके नाम निम्नप्रकार हैं –

प्रथम स्थान – 1. रुचिका पाण्ड्या, जयपुर

द्वितीय स्थान – 2. मानसी जैन, दिल्ली

तृतीय स्थान – 3. सुनीता ज्ञानचंद गोधा, अलीगढ–टोंक

सान्त्वना पुरस्कार –

4. कांता जैन, अशोकनगर
5. भरतकुमार खेमचंद जैन, उदयपुर
6. रमेशचंद जैन, कोटा
7. नीला भरत गांधी, मुम्बई
8. सलोनी जैन, कोलारस

अन्य सही उत्तर देने वाले – 9. अनिल जैन गाजियाबाद, 10. नितिन जैन दिल्ली, 11. भानुकुमार जैन कोटा, 12. हेतलभाई नटवरलाल शाह सुरेन्द्रनगर, 13. केतनाबेन शाह सुरेन्द्रनगर

– आप्त अनुशील जैन, दमोह (संयोजक)

नोट :– प्रश्न क्रमांक 16 के उत्तर में तत्त्वश्रद्धान, सम्यग्दर्शन, सत्यश्रद्धान आदि सभी उत्तर सही माने गये हैं।

बनारसीदासजी की जन्म जयंती मनायी

कोटा (राज.) : यहाँ सन्मति संस्कार संस्थान द्वारा पण्डित बनारसीदासजी की जन्म जयंती (माघ शुक्ल एकादशी) दिनांक 23 फरवरी 2021 को मनायी गयी।

इस अवसर पर पण्डित बनारसीदासजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री नवीनचंदजी मेहता मुम्बई, मुख्य अतिथि श्री अतुलजी जैन बुरहानपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री अभिनन्दनजी जैन दिल्ली थे।

गोष्ठी में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर ने पण्डित बनारसीदासजी का चरणानुयोग एवं करणानुयोग, पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा ने पण्डित बनारसीदासजी का दृष्टांत वैभव, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम ने पण्डित बनारसीदासजी द्वारा आध्यात्मिक रचना निर्माण, पण्डित चेतनजी जैन कोटा ने पण्डित बनारसीदासजी के जीवन की रोचक घटनाएं, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे ने पण्डित बनारसीदासजी का जीवन, उनके उतार–चढाव और उससे प्रेरणा एवं विदुषी सुलोचना राजेन्द्रजी दोशी मुम्बई ने पण्डित बनारसीदासजी का जीवन चरित्र विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण दीप्ति जैन भोपाल एवं गाथा जैन पुणे ने किया। गोष्ठी के संयोजक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, संचालक पण्डित खेमचंदजी जैन उदयपुर, निर्देशक पण्डित संजयजी हरसौरा थे।

समस्त कार्यक्रम यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर प्रसारित किया गया।

श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान संपन्न

कोलारस (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय जैन मन्दिर में सकल जैन समाज एवं जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 27 फरवरी तक श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित विकेशजी शास्त्री एवं पण्डित पंकजजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित संजयजी द्वारा वैराग्य कथा का कार्यक्रम भी हुआ।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली द्वारा कराये गये।

आवश्यक सूचना

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित वीतराग–विज्ञान (मासिक) एवं जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) पत्रिकाओं की सॉफ्टकॉपी पी.डी.एफ. फॉर्मेट में **www.ptst.in** वेबसाइट पर प्राप्त की जा सकती है। इसके लिये वेबसाइट पर **Downloads** में वीतराग–विज्ञान या जैनपथप्रदर्शक खोलें, इसके पश्चात् **Search Box** में सन् डालने पर उस वर्ष के सभी अंक मिल जाएंगे। आप किसी भी फाइल को डाउनलोड कर सकते हैं।

(नोट :– सन् 2002 के पश्चात् से अब तक सभी अंक उपलब्ध हैं।)

प्रश्नोत्तरमाला (समयसार अनुशीलन के आधार से)

6 – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 75 – आत्मा का पर से संबंध कितने प्रकार का होता है?

उत्तर – आत्मा का पर से संबंध चार प्रकार का होता है – एकत्वबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धि। यह मैं हूँ – यह एकत्वबुद्धि है। यह मेरा है – यह ममत्वबुद्धि है। मैं इसका कर्ता हूँ – यह कर्तृत्वबुद्धि है। मैं इसका भोक्ता हूँ – यह भोक्तृत्वबुद्धि है।

प्रश्न 76 – पिछली गाथाओं में जिसे एकत्व–विभक्त भगवान आत्मा कहा गया है, छठवीं गाथा में उसे क्या कहा गया है?

उत्तर – ज्ञायक भाव।

प्रश्न 77 – छठवीं गाथा में किस विषय को स्पष्ट किया गया है?

उत्तर – छठवीं गाथा में दृष्टि के विषय को स्पष्ट किया गया है अर्थात् जिस आत्मा का ध्यान करने से केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, जिस आत्मा में अपनापन स्थापित करने का नाम सम्यग्दर्शन है, जिस आत्मा को जानने का नाम परमशुद्ध निश्चय नय है तथा जो आत्मा परमपारिणामिक भावरूप है। उस भगवान आत्मा का स्वरूप ही इस गाथा में स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न 78 – आत्मा को पारिणामिक भाव न कहकर ज्ञायकभाव क्यों कहा गया है?

उत्तर – आत्मा परमपारिणामिक भाव होने पर भी आत्मा को ज्ञायक भाव इसलिए कहा गया है कि पारिणामिक भाव तो सभी द्रव्यों में समानरूप से पाया जाता है; पर ज्ञायकभाव आत्मा का असाधारण भाव है।

प्रश्न 79 – परम उपादेय भाव कौनसा है और क्यों?

उत्तर – परम उपादेय भाव ज्ञायक भाव है; क्योंकि यही मुक्तिमार्ग का मूल आधार है।

प्रश्न 80 – व्याख्या कीजिए – अपरिणामी ज्ञायक भाव परभावों से भिन्न उपासित होता हुआ शुद्ध कहलाता है।

उत्तर – परपदार्थों और उनके भावों से भिन्न होने के कारण यद्यपि ज्ञायकभाव सदा शुद्ध ही है, तथापि जब तक यह ज्ञायक भाव अपने श्रद्धा–ज्ञान–चारित्र का विषय नहीं बनता, अनुभूति में नहीं आता; तब तक उसके शुद्ध होने का लाभ पर्याय में प्राप्त नहीं होता, मिथ्यात्व की ग्रन्थि का भेद नहीं होता, आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्द की कणिका नहीं जगती। अत: यह कहा गया है कि परभावों से भिन्न उपासित होता हुआ शुद्ध कहलाता है। अनुभव के काल में ज्ञायकभाव जैसा नजर आता है, परमशुद्ध निश्चयनय का विषयभूत वही ज्ञायकभाव शुद्ध कहलाता है।

कहान बाल शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह के 10 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 23 से 25 फरवरी तक ऑनलाइन कहान बाल शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री अनंतराय ए. शेठ मुम्बई एवं ध्वजारोहण श्री नेमिषभाई शाह मुम्बई ने किया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी. डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री करहल द्वारा कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ। शिविर में एक दिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। प्रात:काल जिनेन्द्र पूजन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, रात्रि में पण्डित संजयजी जेवर द्वारा पौराणिक कथाओं का आयोजन एवं अनेक बाल प्रतिभाओं के वीडियो का प्रदर्शन भी हुआ।

शिविर के निर्देशक पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं संयोजक पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ थे। आभार प्रदर्शन विद्यालय संचालिका श्रीमती दीपा हितेनभाई शेठ ने किया।

श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान संपन्न

अलवर (राज.) : यहाँ चेतन एन्क्लेव में श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री रत्नत्रय दिगम्बर जिनमंदिर में स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी को श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ, जिसके आमंत्रणकर्ता श्री राजेन्द्रकुमार विनीतकुमार जैन कहान परिवार थे।

इस अवसर पर पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचन का लाभ मिला।

स्वाध्याय एवं साधर्मी मिलन कार्यक्रम संपन्न

हेरले–कोल्हापुर मुमुक्षु मण्डल के साधर्मियों को दिनांक 31 जनवरी को ब्र. यशपालजी जैन का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम तीन चौबीसी जिनमंदिर के दर्शन व जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त ब्र. यशपालजी द्वारा स्वाध्याय एवं शंका–समाधान हुआ। साथ ही पण्डित नितिनजी कोठेकर, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री एवं श्री अभयजी पाटील का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग पर श्री अप्पासाहेब मुळे ने रविवारीय स्वाध्याय को नियमित रखने का संकल्प किया। इस कार्यक्रम का संयोजन श्री सूर्यकान्त कुसनाळे एवं श्री माणिकचंदजी जैन ने एवं निर्देशन पण्डित महावीरजी पाटील सांगली ने किया।

धन्यवाद !

श्री कपूरचंदजी जैन लवाणवाले की पुण्यस्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती छिगनदेवी जैन लवाण की ओर से संस्था हेतु 11000/– रुपये प्राप्त हुए। हार्दिक धन्यवाद !

तत्त्वचिन्तन

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(हरिगीत)

निज आत्मा को जानकर पहिचानकर निज आत्मा।
निज आतमा का ध्यान धर जो हो गये परमातमा।।
वे वीतरागी सर्वज्ञानी हितंकर सब लोक के।
श्री ऋषभ से वीरान्त तक चौबीस तीर्थंकर हुये।। १।।

उनने जगत के सामने जिस तत्त्व को प्रस्तुत किया।
सुख शान्तिमय जिस वीतरागी मार्ग को प्रस्तुत किया।।
वह अहिंसक मार्ग जग में आज भी विद्यमान है।
और उसको समझना भी एकदम आसान है।। २।।

ऋषभ से वीरान्त तक नमकर सभी को भाव से।
उनके बताये मार्ग को उत्साह से अतिचाव से।।
निजचित्तशुद्धि के लिये अत्यन्त निर्मल भाव से।
तत्त्वचिन्तन कर रहा हूँ सहज ही सद्भाव से।। ३।।

यदि पढ़े कोई चाव से गहराई से अध्ययन करे।
पठन-पाठन करे मन से भाव से चिन्तन करे।।
और उसको लाभ हो तो होय मेरा चित्त भी।
प्रसन्न है हे बंधुवर! हम सभी अनुमोदन करें।। ४।।

जीव और अजीव आस्रव बंध संवर निर्जरा।
अर मोक्ष ये सब तत्त्व हैं अर अर्थ हैं तत्त्वार्थ हैं।।
इनका विमल श्रद्धान दर्शन ज्ञान सम्यग्ज्ञान है।
और दर्शन ज्ञानमय निज में रमणता ध्यान है।। ५।।

पुण्य एवं पाप भी तत्त्वार्थ में आते रहे।
पुण्य एवं पाप आस्रव बंध के ही भेद हैं।।
पुण्य आस्रव पाप आस्रव इसतरह से बंध में।
हम पुण्यबंधरु पापबंधरु भेद करते रहे हैं।। ६।।

यद्यपि षट्द्रव्यमय सारा जगत ही ज्ञेय है।
किन्तु सब परद्रव्य केवल ज्ञेय केवल ज्ञेय हैं।।
आत्मा के विकारी परिणाम आस्रव बंध भी।
रे पुण्य एवं पाप भी तो ज्ञेय हैं पर हेय हैं।। ७।।

मुक्ति-संवर-निर्जरा ये ज्ञेय हैं उपादेय हैं।
है ज्ञेय अपना आत्मा श्रद्धेय है अर ध्येय है।।
निज आतमा में अपनपन सम्यक्त्व है श्रद्धान है।
निज आतमा में रमणता ही आतमा का ध्यान है।। ८।।

श्रद्धान एवं ध्यान ही तो मुक्तिमग में मुख्य हैं।
निज आतमा की साधना आराधना ही मुख्य हैं।।
अरे आस्रव बंध तो दुखकरण हैं दुखरूप हैं।
अशुचि हैं विपरीत हैं अर भवभ्रमण के रूप हैं।। ९।।

अरे आस्रव-बंध तो भवरूप हैं भवकूप हैं।
अरे इनके बंधनों में फंस रहे चिद्रूप हैं।।
पाप आस्रव पुण्य आस्रव बंध के ही हेतु हैं।
यदि बंध से है छूटना तो मोह इनका छोड़िये।।१०।।

पुण्य को भी पापवत् ही हेय कहकर आपने।
पुण्य का अपमान प्रियवर कर दिया है आपने।।
संसार में सुख-शांति दाता स्वर्गदाता पुण्य है।
परम्परा से कहें तो अपवर्ग दाता पुण्य है।।११।।

आस्रव हैं हेय एवं बंध भी जब हेय हैं।
मुक्तीरमा की प्राप्ति में इनका ना रंच प्रदेय है।।
जब सभी आस्रव हेय हैं सब बंध भी जब हेय हैं।
पुण-पाप उनके भेद हैं अतएव वे भी हेय हैं।।१२।।

मिथ्यात्व अविरति प्रमाद अर कषाय एवं योग ये।
सब स्वयं आस्रव भाव हैं अर बंध के सब हेतु हैं।।
पुण्य एवं पाप सब बस इन्हीं भावों से बंधे।
क्योंकि ये सब भाव ही तो बंध के कारण कहे।।१३।।

कर्मबंधन होय इनसे कर्म ना इनसे कटें।
बंध के ये पाँच हेतु पुण्य भी इनसे बंधे।।
बंध के जो हेतु वे सब मुक्तिमग के हेतु ना।
मुक्ति के हैं हेतु जो वे बंध के हों हेतु ना।।१४।।

जिन्हें मुक्ति चाहिये वे बचें आस्रव-बंध से।
वे बचें सबसे पूर्णतः सब तरह के संबंध से।।
कोई किसी के कुछ नहीं हम भी किसी के कुछ नहीं।
और कोई किसी से भी कभी जुड़ सकते नहीं।।१५।।

(क्रमशः)

2 मार्च 2021, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

आचार्य कुन्दकुन्द जयंती सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 16 फरवरी को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में आचार्य कुन्दकुन्द जयंती मनायी गयी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अरविन्दकुमारजी शास्त्री भीलवाड़ा ने की। इसके अतिरिक्त पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा की भी विशेष उपस्थिति रही। पण्डित सुनीलजी के उद्बोधन का भी लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रात:काल विशेष पूजन, आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समयसार पर प्रवचन प्रसारण एवं आचार्य कुन्दकुन्द के व्यक्तित्व-कर्तृत्व विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन हुआ। दोपहर को आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित एनिमेशन फिल्म का प्रसारण एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त आचार्य कुन्दकुन्द जयंती की विशेष सभा का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में 'कलिकाल सर्वज्ञ कुन्दकुन्दाचार्य का व्यक्तित्व' विषय पर शाश्वत जैन भोपाल, 'कुन्दकुन्दाचार्यकालीन विभिन्न परिस्थितियाँ' विषय पर संयम जैन दिल्ली, ''मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो' विषय पर स्वानुभव जैन खनियांधाना, 'जैनधर्म के प्रसारक-प्रचारक और प्रशासक : आचार्य कुन्दकुन्द' विषय पर संभव जैन दिल्ली एवं 'हुए हैं, न होहिंगे मुनीन्द्र कुन्दकुन्द से' विषय पर अमन जैन आरोन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त आचार्य कुन्दकुन्द पर कविता प्रस्तुति समर्थ जैन हरदा ने एवं आचार्य का चित्र प्रदर्शन अचिंत्य जैन बण्डा ने किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अभिषेक जैन देवराहा, संयोजन आप्त अनुशील जैन दमोह एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से पल त्रिवेदी ने किया। तकनीकी सहयोग हितंकर जैन उदयपुर ने एवं आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया। समस्त कार्यक्रम यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर प्रसारित किया गया, जिसका सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कुन्दकुन्द जयंती

वीर कुन्दकुन्द कहान जैन एसोसिएशन **नैरोबी** एवं सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द की जन्म जयंती मनायी गयी।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्री अजितजी जैन बड़ौदा थे।

इस अवसर पर अलिशा-विशाल जैन **स्विट्जरलैण्ड,** पिंकेश जैन **कनाडा,** कोमल शाह **केन्या,** राहुल-परिन्दा **न्यूजीलैण्ड,** ऋचा जैनी **अमेरिका,** अक्षय शाह **यू.के.** आदि युवा वक्ताओं ने आचार्य कुन्दकुन्द के विषय में अपने विचार व्यक्त किये। इस प्रसंग पर श्री अजितजी जैन बड़ौदा के विशेष सम्बोधन के साथ-साथ डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अपने अध्यक्षीय भाषण में आचार्य कुन्दकुन्ददेव के व्यक्तित्व-कर्तृत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम के मध्य पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा एक सुन्दर भजन की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

केसली-सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनमंदिर (बड़ा मंदिर) के प्रांगण में सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान में श्री महावीर स्वामी मानस्तंभ जिनबिम्ब वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 23 से 25 फरवरी तक श्री समयसार महामंडल विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

हार्दिक बधाई!

कोटा (राज.) निवासी श्री प्रेमचंद-सुनीता बजाज के सुपुत्र **चि. तन्मय बजाज** का विवाह फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री जिनेशचंद-इन्द्राणी जैन की सुपुत्री **सौ. चंद्रा जैन** के साथ दिनांक 16 फरवरी को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में संस्था हेतु 5100/- रुपये, जैनपथप्रदर्शक हेतु 5100/- रुपये एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये।

इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 फरवरी 2021

प्रति,